प्रथम अध्याय

"सेठ गोविन्ददास : व्यक्तित्व एवं कृतित्व।"

प्रथम अध्याय
सेठ गोविन्ददास – व्यक्तित्व एंव कृतित्व

किसी भी रचना को पढने या समझने से पहले उस रचनाकार के जीवन तथा उसकी परिस्थिति को जान लेना आवश्यक है, क्योंकि इमारत कितनी ऊँची है मजबूत है यह महत्वपूर्ण नहीं होता बल्कि उसकी नींव कितनी मजबूत है, यह देखना आवश्यक है। रचनाकार जीवन में आए प्रसंग तथा उसके परिवेश का चित्रण उसकी कृत्तियों में निश्चित दिखाई देता है। इसलिए उसे जानना जरूरी है। रचनाकार का जीवन तथा उसके परिवेश का अध्ययन करना हमे आवश्यक है जिससे उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व का पता चल सकता है।

1.1 व्यक्तित्व :-

सेठ गोविन्ददास जी बहुमुखी प्रतिभा - संपन्न आधुनिक रचनाकारों में से एक सशक्त रचनाकार हैं। प्राय: व्यक्तित्व की दृष्टि से जिन बातों को महत्व दिया जाता उनमें व्यक्ति के विशेष गुणों से ही उसका व्यक्तित्व बनता है। जिसमें उसके सोचने, बोलने, लिखने, रहने और जीवनयापन करने के ढंग सम्मिलित हैं। इसके साथ ही शरीर बनावट, जीवनमूल्य, मनोवृत्तियाँ, विचार आदि महत्वपूर्ण हैं।

उपर्युक्त कथन के आधार पर कहा जा सकता है कि, व्यक्तित्व शारीरिक एवं मानसिक प्रवृत्तियों का समुच्चय है। जो किसी भी व्यक्ति को अन्य व्यक्तियों से अलग करता है। साहित्यकार के व्यक्तित्व की जो छाप दूसरों पर पडती है, वह उसकी रचनाओं से अविभाज्य होती है।

1.1.1 जन्म -

स्वाधीनता पूर्व काल के सुप्रसिध्द ऐतिहासिक नाटककार सेठ गोविन्ददास जी का जन्म सन 1896 ई. में मध्यप्रदेश के जबलपुर नामक ग्राम में हुआ।

1.1.2 माता-पिता -

सेठ जी के पिता राजा जीवनदास सेठ एक उच्चकुलीन व्यक्ति माने जाते थे। इनकी माता पार्वतीबाई धर्मपरायण हिन्दू नारी थी। दादा का नाम गोकुलदास था। जबलपुर में जो बडे महल, संस्थाएँ और धार्मिक मंदिर हैं वे उनकी पहचान बनकर आज भी दिखायी देते हैं। धनिक परिवार होने के कारण लक्ष्मी की सदा कृपा रही है । गोविन्ददास जन्म से लेकर ही

खुशियों का माहोल परिवार में छाया था क्योंकि वे अपने माता-पिता की पहली संतान थी। पिता को धार्मिक विधियों में ज्यादा दिलचस्पी थी और वल्लभ संप्रदाय के वे अनुयायी थे। पौराणिक गाथाओं का प्रभाव सेठ जी के बाल मन पर हुआ और भारतीयता के प्रति सेठ जी को अटूट आस्था बनी रही।

1.1.3 बाल्यकाल -

सेठ जी पर बाल्यकाल में हुए संस्कार हमे उनकी साहित्यिक कृतियों के माध्यम से दिखायी देते हैं। पिताजी के आदर्श का उनके मन पर गहरा असर पडा था। बाल्यकाल में ही ब्रजमण्डल की रासमण्डलियों के सुमधुर रास-गान अभिनय और संगीत कार्यक्रम नियमित हुआ करता था। उसमें बडी दिलचस्पी सेठ जी रखते थे। जबलपुर में माता-पिता और भाई-बहन के साथ बडी खुशी से बिताया। देशभक्ति गरीबों की जिंदगी तथा समस्याएँ और पराधीनता पंजे से मुक्त होने की चेतना बाल्यकाल से ही उनके मन में जागने लगी। परिवार में पहली संतान होने के कारण बडे लाड-प्यार के साथ राजकुमारों की तरह सेठ जी की बाल्यावस्था बीत चुकी है।

1.1.4 परिवार -

सेठ जी के परिवार में चारों तरफसुख-समृध्दि और विलासपूर्ण जीवन दिखायी देता है परिवार में जन्मे सेठ जी को किसी भी बात की तकलीफ नही है। सभी मिलजुलकर बडे प्यार से रहते हैं। परिवार में दादा जीवनदास, माता-पिता, दो सुपुत्रीयाँ रत्नकुमारी और दो दामाद और दो सुपूत्र श्री.मनमोहनदास जी और जगमोहनदास जी। धार्मिक विधियों में सभी को दिलचस्पी, आपसी प्यार भरा व्यवहार, अमीर होते हुए भी अहंम नहीं, सुसंस्कारीत और देशभक्ति की भावना उनके परिवार में दिखायी देती है।

1.1.5 शिक्षा-दिक्षा -

सेठ जी के पितामह कम पढे थे इसलिए व अपने पुत्र सेठ गोविन्ददास को अच्छा पढाना चाहते थे। ईमानदार इन्सान बनाना चाहते थे। अच्छी से अच्छी शिक्षा प्राप्ति के लिए रिटायर्ड प्रोफेसर, श्री.द्वारकानाथ सरकार की नियुक्ति घर पर ही की थी। प्राथमिक, माध्यमिक और उच्च शिक्षा भी पाठ्यपुस्तकों के आधारपर घर पर ही हो गयी थी। अंग्रेजी, संस्कृत और हिन्दी का उच्चतम ज्ञान सेठ जी को घर पर ही कराया गया। बचपन से हिन्दी

भाषा के प्रति लगाव रहा। अंग्रेजी शिक्षा और उच्चारण के लिए अध्यापक 'मि.डिग्बिट' की नियुक्ति पिताजी ने घर पर ही की थी।

इस तहर उनकी बी.ए. तक की शिक्षा पाठ्यपुस्तकों के आधारपर घर पर ही की। बाद में वे ललित-कला, पारसी कम्पनियों द्वारा अभिनीत नाटक, साहित्य और इतिहास से लगाव उनके मनमें उध्दिपत हुआ। अंग्रेजी के अच्छे विद्वान होने के कारण उन्होने उपन्यास, नाटक और आलोचनात्मक ग्रन्थों का अध्ययन किया।

1.1.6 वैवाहिक जीवन -

सेठ जी का विवाह सन 1908 ई. में. श्रीमती गोदावरी देवी के साथ हुआ। वैवाहिक जीवन में उन्हें चार संतानों की प्राप्ति हुई। जिनमें दो सुपुत्रियाँ है। रत्नकुमारी और पद्मावती और दो पुत्र मन मोहनदास जी और जगमोहनदास जी। सेठ जी का वैवाहिक जीवन सभी सुखों से परिपूर्ण है।

1.1.7 मित्रमंडली -

सेठ जी के चारों तरफ मित्रों का बोलबाला रहा है। राजनीतिक नेता और साहित्यिक होने के कारण दोनों तरफ से मित्रों का होना अनिवार्य है। साहित्य के क्षेत्र में सेठ जी के मित्र राष्ट्रकवि मैथिली शरण गुप्त, गोविन्दवल्लभ पन्त, सय्यद महमूद, गुलाबराव, हजारी प्रसाद द्विवेदी, बलदेव प्रसाद, वृन्दावनलाल वर्मा, नन्ददुलारे वाजपेयी, रामवृक्ष बेनीपूरी, रामकुमार वर्मा और गोवर्ध्दननाथ 'शुक्ल' आदि हैं। राजनीतिक क्षेत्र में भी सेठ जी के अच्छे मित्र हैं। पं.जवाहरलाल नेहरू,विनोबा भावे, सुभाष चन्द्रबोस, भगवानदास, हरिभाऊउपाध्याय, सुरेन्द्र मोहन घोष और चारूचन्द्र विश्वास आदि हैं। साहित्य और राजनीतिक दोनों क्षेत्रो में सेठ जी अपने मित्रों के साथ हमेशा आनंदित रहते हैं।

1.1.8 भारतीय संस्कृति के प्रति आस्था -

सेठ जी का व्यक्तित्व आधुनिक एवं प्राचीन भारतीय एवं विदेशी तत्वों से बना हुआ है। इस बारे में कमलेश जी लिखते हैं - "भारतीयता उनका प्राण है पर रूढिवादिता के वे घोर शत्रू हैं। उनकी भारतीयता की अपनी मौलिक व्याख्या है। जिसमें वे अपने ढंग से युग की उस समस्त आवश्यकताओं की पूर्ति सम्भव मानते है जिनके लिए हम पाश्चात्य संस्कृति

की ओर देखते हैं। स्पष्टता उनका सबसे बडा गुण है। उनके तर्क अबाह्य होते हैं और उनके पीछे पर्याप्त चिंतन और मनन शक्ति रहती है।'' अत: भारतीय आदर्श एवं साहित्य और संस्कृति के प्रति सेठ जी की अगाध श्रध्दा रही है।

1.1.9बहुमुखी व्यक्तित्व :-

हिन्दी के प्रतिभाशाली नाटककार, राजनीतिक प्रमुख नेता, आदर्शव्यक्ति और देशभक्त, गांधीवादी, भारतीय संस्कृति और राष्ट्र का सेवक गोरक्षा और हिन्दी भाषा के प्रति लगाव हमें एक ही व्यक्ति सेठ जी में दिखायी देते हैं। लक्ष्मी और सरस्वती इन दोनों का मेल सेठ जी में दिखायी देता हैं। सामाजिक, धार्मिक, राजनितिक और सांस्कृतिक क्षेत्रो में उनकी सेवाएँ महान हैं। मानवजीवन की समस्याएँ और सच्चाई के दर्शन नाटको में दिखायी देते हैं। सेठ जी की वेशभूषा सीधी-साधी हैं और जवाहर जाकीट पहनते ''गौर वर्ण, मध्यम कद और चश्मे के अन्दर से झाँकती हुई दो पैनी और तेजवान आँखे दिखायी देती हैं।''

1.1.10 धनवान व्यक्ति -

सेठ गोविन्ददास जी का परिवार जबलपुर नगर में ही नहीं तो पूरे मध्यप्रदेश में सर्वाधिक धनवान कुटुम्ब माना जाता हैं। आज भी बडों का कहना है कि ''सेठ जी के यहाँ रूपया गिना नहीं वरना तोला जाता था और केवल रूपयों की बोरियाँ गिनी जाती थी। गोविन्ददास के पिताजी राजा जीवनदास उस समय के बडे माने जाते थे। सेठ जी के परदादा खुशालचन्द जी को सन 1857 में अंग्रेज की करने पर अंग्रेजों ने एक वजनदार कमरपट्टा भेट के रूप में दिया था। सेठ जी के पिता को ब्रिटिश शासन ने 'राजा' पदवी और दादा को 'दिवान बहादुर' से सम्मानित किया था।

1.1.11 उदार व्यक्तित्व -

समस्त संपत्ती को त्याग कर सेठ जी ने तपस्या त्याग, हिन्दी साहित्य के लिए और स्वाधीनता आंदोलन में अपना जीवन अर्पित किया है। सेठ जी जब जेल छुटकर आए तब अधिकारियों में संघर्ष हो गया। तुरंत ही सेठ जी ने सम्पत्ति का त्यागपत्र दे दिया और सारी सम्पत्ति देश के स्वाधीनता में न्योछावर कर दी। सम्पत्ति का मोह त्यागना सबसे बडी बात होती है। हर एक व्यक्ति आज पैसों के लिए अपना इमान बेच रहा है, दूसरों की जान ले रहा

है। सेठ जी स्वयं को सिर्फ एक मामूली गरीब इन्सान समझते थे। आदर्श उनका जीवन का ध्येय था। इस प्रकार सर्वगुणों से संपन्न , निस्वार्थ और स्नेहमयी स्वभाव से उनका व्यक्तित्व उभरा है।

1.1.12 सेवाव्रती गोविन्ददास -

अपने जीवन में सेठ जी ने निरंतर रूप से, निस्वार्थ भावना से देश की सेवा की है। जबलपुर नगर की सरकारी कचहरी, टाऊन हाल, औरतों का अस्पताल, बच्चों का अस्पताल, धर्मशाला और जबलपुर नगर में सार्वजनिक संस्थाएँ उन्होंने खुद के पैसों से बनायी हैं। आधुनिक जबलपुर के सेठ जी निर्माता है। प्लेग की बीमारी, अकाल पीडित लोगों को भूदान यज्ञ, गोसेवक और हिंन्दी साहित्य के वे सेवाव्रत्ती रहे हैं।

1.1.13 राजनीतिक व्यक्तित्व -

राजनीतिक क्षेत्र में स्वाधीनता संग्राम में प्रमुख नेता सेठ जी थे। पं.जवाहरलाल नेहरू के साथ उनके गहरे तालुकात थे। राजनीतिक क्षेत्र में सेठ जी प्रख्यात नेता, राष्ट्रीय आन्दोलन के महारथी और राजनीतिज्ञ थे। वाक्यचातुर्य होने के कारण सेठ जी ने राजनीतिक क्षेत्र में अपनी एक अलग पहचान छोड दी है। सेठ जी अपने प्रान्त के काँग्रेस के अध्यक्ष कितने सालों तक रहे थे और सन 1936 में त्रिपुरी काँग्रेस की स्वागत-समिती के सेठ जी प्रधान थे। सन 1922 ई. में. सेठ जी मंत्री थे।

1.1.14 साहित्य के प्रति अनुराग -

हमें किसी वस्तु अगर व्यक्ति के प्रति अनुराग है, तो हम उसके लिए दिल से काम करते हैं या अपना पूरा वक्त उसे दे देते हैं। इसीलिए किसी भी काम को पूरा करने के लिए हमारे मन में उसके प्रति अनुराग होना चाहिए। बचपन से ही साहित्य के प्रति अपार प्रेम सेठ जी के मन में था। साहित्य और इतिहास, मनोविज्ञान, कलाशास्त्र, समाजशास्त्र और दर्शन का भी वे अध्ययन करते रहे। वेद, गीता, उपनिषद, श्रीभद्भागवत, संस्कृत और भाषा के काव्यग्रंथ और पाश्चात्य नाटककार इब्सन और बर्नाड शाँ का अधिक प्रभाव है। सेठ जी लेखन और चिंतन में रूचि रखनेवाले है इसी कारण वे महान नाटककार हैं। राष्ट्रीय नवजागरण की चेतना और स्वाधीनता संग्राम का प्रतिबिंब सेठ जी के साहित्य में है। अध्ययन और चिंतन के कारण ही भारतीय जीवन प्रणाली का रूप सेठ जी में स्थिर हो गया है।

1.1.15 हिन्दी साहित्य, सम्मेलन और स्वाधीनता संग्राम में दिलचस्पी -

सेठ गोविन्ददास हिन्दी के स्वप्नद्रष्टा है। सेठ जी हिन्दी साहित्य के सभापति थे। अनेक अधिवेशन के वे अध्यक्ष रहे हैं। हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने में उनका महत्वपूर्ण योगदान रहा है। सेठ जी की बदौलत हम हिन्दी का विकसित रूप आज देख रहे हैं। हैद्राबाद, कानपुर,सुरत और ग्वालियर के अधिवेशन में सेठ जी का सक्रिय सहभाग उन्होंने लिया और अनेक प्रस्तावों पर वाद-विवाद करने की आदत सेठ जी को थी। स्वाधीनता संग्राम में अपने प्राणों की बाजी देने की सेठ जी की हमेशा इच्छा रहती थी। प्रमुख नेता के रूप में वे अपने साथियों से अपना देश स्वतंत्र करने में दिल से वह चाहते थे।

1.1.16 सामाजिक जागरण और राष्ट्र सेवा -

समाज में स्वाधीनता की भावना और देशभक्ति का महत्व अपने व्यक्ति के रूप में दिखाने का प्रयास किया है । समाज के प्रति हमें कुछ तो कार्य करना है, इसकी सेठ जी को जिज्ञासा थी। सामाजिक, सांस्कृतिक और राष्ट्रीय विचारों के प्रति हमेशा उनके मन में प्रेम दिखायी देता है। साथ ही साथ सेठ जी ने राष्ट्र की सेवा करने में अपना सम्पूर्ण जीवन अर्पित किया था। समाज में नवचेतना निर्माण करने का कार्य और राष्ट्र के लिए अपना जीवन अर्पित करनेवाले एक आदर्श, महान व्यक्ति के रूप में हमारे सामने उनका व्यक्तित्व उभर आता है।

1.1.17 गांधीवादी विचारों के समर्थक -

सेठ जी ने अपना पूरा जीवन गांधीवादी के समर्थक के रूप में बिताया है। गांधीवादी विचारों से प्रभावित होने कारण ही उन्होंने वैष्णव संस्कारों में परिवर्तन नहीं किया। सेठ जी ने सिर्फ गांधीवाद पर एक दर्जन नाटक लिखे हैं। सत्य, अहिंसा और प्रेम पर निर्भर होकर सेठजी चलते थे। गांधीवादी होने के कारण सेठजी अपनी शान और शौकत दुनिया को छोडकर स्वतंत्र आंदोलन में शामील हो गये। सेठ गोविन्ददास जी के व्यक्तित्व पर गांधीवादी जीवन दर्शन, राष्ट्रप्रेम की चेतना और अपनी संस्कृति के प्रति गर्व का भाव भरा हुआ है।

1.2 कृतित्व -

हिन्दी साहित्य में सेठ जी प्रतिभावान साहित्यकार के रूप में उभरे हैं। साहित्य के

माध्यम से सेठ जी 'स्व' की अनुभूति 'सर्वथा' में साहित्य के माध्यम से प्रस्तुत करना चाहते है। भारतीय संस्कृती के पुजारी और भारतीय संस्कृती के वे हमेशा गौरव करते रहे है। कुलमिलाकर एक सौ चार नाटकों का निर्माण करके हिन्दी साहित्य में अपना अलग रूतबा पैदा किया है। इनमें पौराणिक, ऐतिहासिक, सामाजिक, समस्याप्रधान प्राय: सभी विषयों पर सांस्कृतिक दृष्टि से उनके नाटकों में विचार हुआ है। उपन्यास और काव्य का निर्माण भी सेठ जी ने किया है। विपुल साहित्य लेखन में कहीं पर भी हमें कथा, चरित्र, भावना तथा समस्या की पुर्नावृत्ति दिखायी नहीं देती। यही प्रमुख रूप से सेठ जी के साहित्य कृति की विशेषता है।

1.2.1 सेठ जी के नाट्य-साहित्य का परिचय -

प्रारंभ से ही सेठ जी नाटक विधा से ज्यादा दिलचस्पी रखते थे। नाटकों में ऐतिहासिक नाटक सर्वश्रेष्ठ माने जाते हैं। सेठ जी का सारा नाट्य साहित्य राष्ट्रीय एकात्मत ा, देशभक्ति की भावना और गांधीवादी आदर्श से ओतप्रोत है। अभिनय और रंगमंचियता के उचित मिश्रण से नाटक प्रभावशाली दिखायी देते हैं। ज्यादा तर नाटक सत्य घटना पर आधारित हैं।

1.2.1.1 ऐतिहासिक नाटक -

जिनके नाटकों ने देश की राजनीति और उत्थान-पतन में भाग लिया हो, उसे ऐतिहासिक नाटक कहते है। कुल मिलाकर सोलह ऐतिहासिक नाटक लिखे है वह निम्नलिखित हैं -

(1) कर्तव्य (2) कर्ण (3) विकास (4) सिंहलद्वीप
(5) विजयबोली (6) · शशिगुप्त (7) अशोक
(8) भिक्षूसे गृहस्थ और गृहस्थ से भिक्षू (9) हर्ष (10) कुलीनता
(11) शेरशाह (12) वल्लभाचार्य (13) रहीम (14) विश्वासघात
(15) भारतेन्दु (16) महात्मा गांधी

1.2.1.2 ऐतिहासिक एकांकी -

सेठ गोविन्ददास जी कुल मिलाकर 42 एकांकी लिखे है। इनमें ऐतिहासिक एकांकी 29 हैं और सामाजिक समस्या प्रधान एकांकी हैं। सेठ जी ने पहली बार पाश्चात्य

शैली का उपयोग अपने हिन्दी साहित्य एकांकी में किया है। एकांकी निम्म प्रकार से है। (1) जावाल (2) रैकन और जान-क्षृति (3) कृषि-यज्ञ (4) बुध्द की एक शिष्या (5) बुध्द के सच्चे स्नेही कौन ? (6) जालौक और भिखारिणी (7) चन्द्रापीड और चर्मचार (8) सहित या रहित (9) अठ्ठानवे किसे ? (10) अपरिगृह की पराकाष्ठा (11) चैतन्य का संन्यास (12) नानक की नमाज (13) शिवाजी का सच्चा स्वरूप (14) गुरू तेग बहादुर की भविष्यवाणी (15) पतन की पराकाष्ठा (16) निर्दोष की रक्षा (17) बाजीराव की तसवीर (18) सच्चा धर्म (19) सच्ची-पूजा (20) प्रायश्चित (21) भय का भूत (22) केरल का सुदामा (23) वे आँसू (24) कृष्णा कुमारी (25) अजीजन (26) अजीबोगरीब मुलाकात (27) महर्षि की महत्ता (28) परमहंस का पत्नि-प्रेम (29) सूखे-संतरे। इस प्रकार सेठ जी के ऐतिहासिक आदर्शवादी और सामाजिक यथार्थ वादी के रूप में एकांकी देखने को मिलते हैं।

1.2.1.3 सामाजिक नाटक -

''जिनमें समाज के विभिन्न रूपों का यथार्थवादी चित्रण किया गया है, उसे सामाजिक नाटक कहते हैं।'' सामाजिक क्रान्ती सेठ जी नाटकों के माध्यम से लाना चाहते हैं। उन्होंने सामाजिक समस्याओं का हाल और आदर्श समाज का स्वरूप भी स्पष्ट किया है। यथार्थवाद में छिपा हुआ आदर्शवाद सेठ जी दिखाना चाहते है। सेठ जी के सामाजिक नाटक निम्नलिखित है -(1) विश्व-प्रेम (2) प्रकाश (3) नवरस (4) सिद्धांत-स्वातंत्र्य (5) दलित-कुसुम (6) पतित-सुमन (7) पाकिस्तान (8) भूदान।

1.2.1.4 सामाजिक एकांकी - समस्या प्रधान -

(1) स्पर्धा (2) मानवमन (3) निर्माण का आनन्द (4) मैत्री (5) सुदामा का तन्दुला (6) आई सी (क्तग्रल्ल) (7) यू-नो (ँद्रइ्टफ्छ्ध्द्रञ) (8) हंगर स्ट्राईक (9) धोखेबाज (10) फाँसी (11) व्यवहार (12) अधिकार-लिप्सा (13) ईद और होली (14) आधुनिक-यात्रा (15) उठाओ, खाओ खाना (16) बुढे की जीभ (17) चौबीस-घण्टे (18) बन्द नोट (19) महाराज (दो भागो में)। सत्य घटनापर आधारित कुछ एकांकी निम्नलिखित प्रकार से है। 1. कंगाल नहीं 2. सच्चा काँग्रेसी कौन ? 3. पाप का घडा आदि।

1.2.1.5 समस्यात्मक नाटक -

प्रत्येक नाटक में एक समस्या प्रमुख है जिसकी ओर सेठ जी ने हमारा ध्यान

आकर्षित किया है। चाहे राजनैतिक समस्या हो, सामाजिक हो या पारिवारिक समस्या हो। सामाजिक समस्यों पर अधिकतर सेठ जी के नाटक दिखायी देते है। समस्यात्मक नाटक कुल 10 है वह निम्नलिखित प्रकार से है - 1. सेवापथ 2. दु:ख क्यों ? 3. बडा पापी कौन ? 4. त्याग का ग्रहण 5. हिंसा या अहिंसा 6. प्रेम या पाप ? 7. गरीबी या अमीरी 8. सन्तोष कहाँ 9. सुख किस में 10. महत्व किसे ? आदि।

1.2.1.6 सांस्कृतिक नाटक -

सेठ जी ने सांस्कृतिक नाटकों के जरिए भारतीय संस्कृति का आदर्श रूप प्रस्तुत किया है। सांस्कृतिक नाटक चार है - 1. राम से गांधी 2. कर्ण 3. नवरस 4. स्नेह और स्वर्ग।

1.2.1.7 सेठ जी के एक पात्री नाटक -

जिस नाटक में केवल एक ही पात्र बोलते रहता है उसे एक पात्री नाटक कहते हैं। सेठ जी ने प्रथम बार अंग्रेजी शैली पर हिन्दी में एक पात्री नाटकों का सुत्रपात किया था। कुल मिलाकर पाँच एक पात्री नाटक लिखे वह निम्नलिखित हैं -1. शाप और वर 2. प्रलय और सृष्टि 3. अलबेला 4. षटदर्शन 5. सच्चा-जीवन आदि। इनमें एक पात्र किसी वस्तु के माध्यम से अन्तर्द्वंद्व अंकित करता है। स्वयं पात्र के मन में रहनेवाली कथा, उलझने, अपनी नीजी समस्याएँ या दलित भावनाएँ है। इसका जीता-जागता स्वरूप सेठ जी ने एक पात्र नाटकों जरिए प्रस्तुत करने का प्रयास किया हैं।

1.2.1.8 हास्य-व्यंग्य प्रधान एकांकी -

संसार में मनोरंजन का अत्याधिक महत्व है। इसलिए सेठ जी ने हास्य-व्यंग्य प्रधान एकांकी का निर्माण किया है। इनमें वैयक्तिक और सामाजिक दोनों ही प्रकार की दुर्बलताओं को व्यंग्य का निशाना बनाया गया है। एकांकी निम्नलिखित हैं -

1. भविष्यवाणी 2. जाति-उत्थान 3. विरेमिन 4. वह मरा क्यों ? 5. हॉर्स पावर 6. अर्ध्द जागृत आदि।

1.2.1.9 कुछ कथाओंपर रचित पूरे नाटक और एकांकी -

सेठ जी का दृष्टिकोन अन्तर्राष्ट्रीय भी रहा है। वह पृथ्वी भ्रमण करने से सेठ जी का दृष्टिकोन विस्तृत हुआ है। वैदेशिक कथाओं पर रचित नाटक सेठ जी के निम्नलिखित है - 1. मातासाई 2. धर्मभीरू 3. सिंगपाई लान 4. मुकदेन 5. स्तारिक और बाबुश्के 6. गुलबीबी

या इस्लामी दुनियामें पर्दे की खाक 7. परोंवाले कारखाने 8. स्तखानोफ या छोटे से बडो से बडा और 9. दो मूर्तियाँ आदि।

1.2.2उपन्यासकार -

सेठ गोविन्ददास जी को बचपन से ही उपन्यास पढना अधिक अच्छा लगता था। वे हमेशा नये उपन्यास के खोज में रहते थे। सेठ जी का पहला उपन्यास 'तिलस्मी' उन्होंने ग्यारह वर्ष की आयु में ही लिखा था। बाद में उपन्यास पढने में जिज्ञासा बढती गयी। बारह वर्ष की आयु में दूसरा उपन्यास लिखा, जिसका नाम था 'चम्पावती'।

सेठ गोविन्ददास जी की रूचि उपन्यास के प्रति बढती चली गयी। उपन्यास में राष्ट्रीय चेतना की भावना और देश को परतंत्र से मुक्त करना यही उपन्यासों का उद्देश्य रहा था। उपन्यास निम्नलिखित है - 1. कृष्णलता 2. सोमलता 3. इन्दुमती 4. सुरेन्द्र सुन्दरी 5. कृष्ण-कामिनी 6. होनहार और 7. व्यर्थ सन्देह आदि लिखे। सर्वश्रेष्ठ उपन्यास 'इन्दुमती' माना जाता है।

1.2.3काव्यसंग्रह -

उन्होंने प्रतिभा के बल पर और बुध्दि के जोर पर सेठ जी ने काव्य के क्षेत्र में भी साहित्य का निर्माण किया है। परंतु ज्यादा सफलता इसमें नहीं मिली। काव्यों में भारतीय संस्कृति का गौरव, राष्ट्रीय भावना और देशभक्ति का महत्व देखने को मिलता है। निम्नलिखित काव्य दिखायी देते है -

1. जन्मभूमि - प्रेम
2. बाणासूर पराभव और
3. प्रेम - विजय (महाकाव्य)
4. शबरी
5. संवाद सप्तक
6. पत्र-पुष्प (स्फुट कवितायें)
7. स्नेह या स्वर्ग (पश्चिमात्य नाटक)

1.2.4 यात्रा-साहित्य -

सेठ गोविन्ददास जी ने विदेशों की तीन यात्राएँ की है। हर एक स्थान से उन्होंने नया अनुभव महसूस किया है। वहाँ की परिस्थिति का अच्छा अध्ययन किया है। 1. आफ्रिका 2. न्यूजीलँड, आस्ट्रेलिया, फीजी और मलाया गए। 3. मिरज, युनान, फीजी और स्विर्त्झलैण्ड, फ्रान्स, इंग्लड, कनैडा, अमरिका, हवाईद्विप, जापान, चीन , स्याम और बरमा आदि विदेशों की यात्राएँ की है।

सेठ जी पहली यात्रा के पश्चात एक पुस्तक लिखी उसका नाम है ' हमारा प्रधान उपनिवेश' दूसरी यात्रा की पुस्तक का नाम 'सुन्दर दक्षिण पूर्व 'और तीसरा का नाम 'पृथ्वी परिक्रमा ' । विदेशों की यात्राओं के दौरान उन देशों की राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक और आर्थिक जीवन पर अपना मत व्यक्त किया है। इतिहास, धर्म, संस्कृति और कला के प्रति अध्ययन किया है।

1.2.5 आत्मकथा -

सेठ गोविन्ददास जी ने अपना सारा साहित्य आत्म-निरीक्षण में एकत्रित किया हैं। विजयादशमी जबलपुर में जन्म से लेकर सन 1956 ई.में. 'शहीद स्मारक भवन' जबलपुर के प्रबन्ध की हैसियत उद्घाटन तक सारा चित्रण आत्म-निरीक्षण में दिखायी देता है। सेठ जी का समस्त रचनाओं का संग्रह आत्मनिरीक्षण में देखने को मिलता है। सेठ जी के कुछ निबन्ध संग्रह और भाषण संग्रह भी दिखायी देते है। सन 1920 ई.से. तृतीय मध्यप्रदेशीय हिन्दी साहित्य सममेलन के सभापति पद से लेकर सन 1956 ई.में. अंतिम भाषण शहीद स्मारक भवन जबलपुर के उद्घाटन के अवसर पर प्रबन्ध की हैसीयत से किया था। सेठ गोविन्ददास की आत्मकथा लगभग एक हजार पृष्ठांक की हैं। इस प्रकार सेठ गोविन्ददास के रूप में हिन्दी साहित्य को और हमारे भारत देश को उत्कृष्ठ साहित्यिक और एक समूल राजनीतिक नेता प्राप्त हुआ था।

निष्कर्ष :

निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि सेठ गोविन्ददास आधुनिक युग के यथार्थवादी और प्रगतिशील नाटककार हैं। उनकी भारतीय संस्कृति के प्रति अटूट श्रध्दा होने के कारण उनकी रचनाओं में भारतीय संस्कृति की प्रधानता है। सेठ जी पर पाश्चात्य साहित्य का भी

प्रभाव है। फिर भी उनकी आत्मा सदैव भारतीय रही है। इसकी अभिव्यक्ति हमें उनके अनेक नाटकों में मिलती है। सेठ जी के परिवार में लक्ष्मी की सदा कृपा रही है। सेठ जी प्रचंड प्रतिभा के धनी है। उन्होंने अपने विवेच्य नाटकों में राष्ट्रीय चेतना, विचारों की मौलिकता, पात्रों की सजीवता और यथार्थता का प्रतिपादन किया है। पुराण, इतिहास और समाज तीनों ही क्षेत्रो में सेठ गोविन्ददास जी का कार्य युग-प्रवर्तक के रूप में है।

सेठ जी के नाटक आदर्शवादी हैं। विवेच्य नाटकों में आदर्श राजा और राज्य प्रणाली परस्पर मैत्री सम्बन्ध, राष्ट्रीय एकात्मता और विश्वबन्धुत्व की भावना दिखायी देती है। उन्होंने ऐतिहासिक, सामाजिक, समस्या प्रधान, एक पात्री नाटक, सांस्कृतिक नाटक, एकांकी, उपन्यास और काव्य का भी निर्माण किया है। अपने ऐतिहासिक नाटकों में सेठ जी ने उस जमाने के पराक्रमी राजाओं के आदर्श को चित्रित किया है। हरिश्चन्द्र, दधीचि और गांधीजी इन महापुरूषों को अपना जीवनादर्श माना है। उनके नाटकों की प्रमुख विशेषताएँ है - संस्कृति, राष्ट्रीय एकात्मता, विश्वबन्धुत्व की भावना, दार्शनिकता, सामाजिकता, बौध्दिकता और आदर्शवाद आदि।